BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द का राजनीति में कोई विश्वास नहीं था और न ही उन्होनें किसी राजनीतिक कार्यकलापों में कभी भाग लिया। उन्होंने स्वंय कहा था कि "मैं न राजनीतिज्ञ हूँ न राजनीतिक आन्दोलनकारी। मैं केवल आम तत्व की चिन्ता करता हूँ–जब यह ठीक होगा तो सब काम अपने आप ठीक हो जायेंगे।" फिर भी उनके भाषणों और विचारों में राजनीति का जो दर्शन मिलता है वह उन्हें पश्चिम के व्यवसायिक राजनीतिक चिन्तनों से कहीं आगे ले जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक स्वतंत्रता की धारणा का संदेश दिया। स्वामी विवेकानन्द द्वारा रचित कविता "सन्यासी का गीत" से बंगाल के आतंकवादियों तथा राष्ट्रवादियों ने स्वतंत्रता के मूल्य तथा पवित्रता का पाठ सीखा। स्वामी विवेकानन्द के आधुनिक भारत के राजनीतिक चिन्तन को निम्न रूपों में व्याख्या की जा सकती है :–

1. **राष्ट्रवाद का धार्मिक सिद्वांत** – हीगल की भॉति विवेकानन्द का भी विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र का जीवन किसी एक तत्व की अभिव्यक्ति है। स्वामी विवेकानन्द हीगल की तरह ही "राष्ट्र की महत्ता" के प्रतिपादक थे। उनकी दृष्टि में धर्म भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण नियामक का सिद्वांत रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि, "जिस प्रकार संगीत का एक प्रमुख स्वर होता है वैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व हुआ करता है और अन्य सभी तत्व उसी में केन्द्रित होते हैं। भारत का तत्व है "धर्म"। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरूदण्ड बनेगा, इसलिए उन्होनें राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्वांत का प्रतिपादन किया। उनका कहना था कि राष्ट्र की भावी महानता का निर्माण उसके अतीत की महत्ता की

नींव पर ही किया जा सकता है। अतीत की उपेक्षा करना राष्ट्र के जीवन का ही निषेध करने के समान है। उनके विचार में धर्म का अर्थ "शाश्वत तत्व का साक्षात्कार" करना था। वे सामाजिक मत–मतान्तरों और पुरानी पोंगापंथी रूढ़ियों को धर्म नहीं मानते थे। राष्ट्रवाद का आध्यत्मिक अथवा धार्मिक सिद्वांत, राजनीतिक चिन्तन को विवेकानन्द की महत्वपूर्ण देन है। बंकिम की भॉति विवेकानन्द भी भारत को एक आराध्य देवी मानते थे। उन्होंने यह कल्पना की कि भारत देवी माता की दृश्यमान विभूति है, बंगाल के राष्ट्रवादियों और क्रान्तिकारियों की प्रेरणा शक्ति बन गयी।

विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद को एक नये स्वरूप में प्रस्तुत किया, उसे अपनी ही धरती पर, अपने ही पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा दी, अन्धे बनकर यूरोपीयकरण से बचने की सीख दी, धर्म में विश्वास और कर्म में लगन का मंत्र दिया।

2. **स्वतंत्रता संबंधी धारणा** – राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में विवेकानन्द की एक अन्य महत्वपूर्ण देन उनकी स्वतंत्रता की धारणा है। उनका कहना था कि सम्पूर्ण विश्व अपनी अनवरत गति के द्वारा मुख्यतः स्वतंत्रता की ही खोज कर रहा है। उन्होंने कहा कि "जीवन सुख और समृद्वि की एकमात्र शर्त–चिन्तन और कार्य में स्वतंत्रता है, जिस क्षेत्र में यह नहीं है, उस क्षेत्र में मनुष्य जाति और राष्ट्र का पतन होगा।" उन्होंने कहा था कि, "शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होना तथा दूसरों को उसकी ओर अग्रसर होने में सहायता देना मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है। जो सामाजिक नियम इस स्वतंत्रता के विकास में बाधा डालते हैं वे हानिकारक हैं और उन्हें शीघ्र नष्ट करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, जिनके द्वारा मनुष्य स्वतंत्रता के मार्ग पर आगे बढ़ता है।" विवेकानन्द ने स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना। उनके अनुसार स्वतंत्रता उपनिषदों का मुख्य सिद्वांत था, उपनिषदकारों ने शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक आदि स्वतंत्रता के सभी पक्षों का डटकर समर्थन किया था।
3. **व्यक्ति की गरिमा** – स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "राष्ट्र व्यक्तियों से ही बनता है, अतः सभी व्यक्तियों को अपने में पुरूषत्व, मानव की गरिमा तथा सम्मान की भावना

आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिए। इस बात की आवश्यकता है कि "व्यक्ति अपने अहं का देश और राष्ट्र की आत्मा के साथ तादात्मय कर दे।"

4. **शक्ति और निर्भयता का संदेश** – राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में विवेकानन्द की अन्य महत्वपूर्ण देन शक्ति और निर्भयता का सन्देश है। राजनीतिशास्त्र की शब्दावली में हम इसे प्रतिरोध का सिद्वांत कह सकते हैं। विवेकानन्द ने भारतवासियों को शक्ति और निर्भयता का संदेश दिया और उनके ह्दय में यह भावना जागृत करने की कोशिश की कि बिना शक्ति के हम अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख सकते और न अपने अधिकार की रक्षा करने में ही समर्थ हो सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने संदेश दिया कि भारतवासी शक्ति, निर्भीकता और आत्मबल के आधार पर ही विदेशी सत्ता से लोहा ले सकते हैं और अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता को प्राप्त कर सकते हैं।
5. **आर्दश राज्य की धारणा** – स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, मानवीय समाज पर चार वर्ण – ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र बारी–बारी से राज्य करते हैं। ब्राहमण, पुरोहित ज्ञान के शासन और विज्ञानों की प्रगति के लिए है, क्षत्रिय राज्य में क्रूर एवं अन्नायी होता है। इस काल में कला एवं सामाजिक शिष्टता उन्नति के शिखर पर पहुॅच जाती है। वैश्य काल में शोषण परक राज्य की स्थापना होती है तथा अन्त में शुद्रों का राज्य आयेगा अर्थात् मजदूरों का राज्य। उसका लाभ होगा भौतिक सुखों का समान वितरण और उससे सभ्यता निम्न स्तर पर गिर जाता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, यदि ऐसा राज्य स्थापित करना सम्भव हो जिसमें ब्राहमण काल का ज्ञान, क्षत्रिय काल की सभ्यता, वैश्य काल का प्रचार–भाव और शुद्र काल की समानता रखी जा सके, तो वह आर्दश राज्य होगा।
6. **अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यों पर बल** – आधुनिक विश्व में विभिन्न समूहों तथा वर्गो के अधिकारों के समर्थकों के बीच निरंतर संघर्ष के कारण समाज में धीरे–धीरे अधिकारों के परस्पर विरोधी सिद्वांतों की सफलता के लिए युद्व का अखाड़ा बनता जा रहा है। लेकिन स्वामी विवेकानन्द ने कर्त्तव्यों को महत्व दिया। वे चाहते थे कि सभी व्यक्ति और समूह अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों के पालन में ईमानदार हो। स्वामी विवेकानन्द स्वंय भिक्षु और संन्यासी थे किन्तु उन्होंने निष्काम भाव से अपना कर्त्तव्य करने वाले गृहस्थ को सर्वोच्च स्थान दिया।

7. **<u>अन्तर्राष्ट्रीयतावाद एवं विश्वबन्धुत्व</u>** – विवेकानन्द उग्र राष्ट्रवाद के बजाय अन्तर्राष्ट्रवादी थे। वे मानव–मानव के भेद को अस्वीकार करते थे। वे हिन्दू धर्म तथा भारत से असीम प्यार करते थे किन्तु अन्य किसी राष्ट्र से उन्हें घृणा नहीं थी। उन्होंने एक बार कहा था, "निःसन्देह मुझे भारत से प्यार है, पर प्रत्येक दिन मेरी दृष्टि निर्मल होती जाती है। हमारे लिए भारत या इंगलैण्ड या अमेरिका क्या है ? हम तो ईश्वर के सेवक हैं जिसे बह्म कहते हैं। जड़ में पानी देने वाला क्या सारे वृक्ष को नहीं सींचता हैं।"